इत्यलम

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-4)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

‘इत्यलम’

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-4)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

'इत्यलम' 4

वस्तु-भाव: विवेचन; भाव-सातत्य: पूर्ववर्ती काव्य संग्रहों के संस्कार; बंदी जीवन की स्मृतियाँ; कवि-कर्म से सम्बंधित रचनायें; संवेदना में नया मोड़ (पहला चरण); संवेदना में नया मोड़(दूसरा चरण); नवीन वस्तु-योजना; कवि-व्यक्तित्व(अस्मिता-बोध) ; प्रेम-चित्रण; वासनात्मक पक्ष, भावात्मक पक्ष; प्रकृति-चित्रण; मिथक-चेतना; अभिव्यक्ति-विधान; तद्भव/लोक-बोली के शब्द/पद; बिम्ब-योजना; मनोभावों के बिम्ब; प्रकृति से चुने गए बिम्ब; संगीत का बिम्ब; प्रकाश का बिम्ब; माँ और शिशु के बिम्ब; कुछ विशिष्ट बिम्ब; विरोधी बिम्ब; लययुक्त गति समन्वित बिम्ब; नवीन उपमान/पद योजना; वनस्पतियाँ –वृक्ष; पशु-पक्षी

इत्यलम्

'इत्यलम्' का प्रकाशन काल सन् 1946 है। इस संग्रह में कुल 89 रचनाएँ हैं, [1] जिनकी रचना-अवधि सन् 1933 से 1945-46 तक है।

वस्तु-भाव विवेचन :

भाव-सातत्य : पूर्ववर्ती काव्य संग्रहों के संस्कार :

किसी कवि की रचनाओं में विचार-धारा या भाव-सातत्य की परख कुछेक रचनाओं के आधार पर नहीं की जा सकती है; फिर भी भाव-सातत्य की परख के लिए वर्तमान या विवेच्य काव्य-संग्रह पर पूर्ववर्ती काव्य संग्रहों की छाप या उनसे प्राप्त संस्कार का अध्ययन करना समीचीन होगा। इस दृष्टि से 'इत्यलम्' की चार रचनाओं का उल्लेख उचित होगा। ये रचनाएँ हैं- 'अकाल धन' 'चलो चलें' 'विशाल जीवन'; और 'कीर'।

'अकाल धन' का विषय प्रेम है। बादल अकाल में घिरते हैं, प्रेम की पीर को उभार जाते है स्मृति की कसक को जीवित कर देते हैं। इस कविता में निराशा का वातावरण है विस्मृति के अन्धकार में स्मृति के दीप जलते है पीड़ा की अलकें पसरी हैं।

'चलो चलें' में जीवन-पट की लिपि धुंधली है, मानस-कानन उजड़ा है, पथ कंटक मय है, जीवन की विभूति बिखरी है, पराजय की कसक मन में बाकी है। इस कविता को 'भग्न दूत' की रचना 'पराजय गान' के समकक्ष रखा जा सकता है। लेकिन आशा की हल्की किरण दिखायी पड़ती है, जीवन की धुँधली लिपि को कवि व्यथा-नीर से धो देना चाहता है। कवि के लिए व्यथा शक्ति-स्रोत बन जाती है।

---

1 'सदानीरा-1 के परिशिष्ट में,'इत्यलम्' की कविताओं के क्रम में, 'मुक्त है आकाश' रचना काल सन् 1941, का उल्लेख नहीं है। लेकिन यह कविता 'सदानीरा-1' में दी गई है। पं. विद्यानिवास मिश्र के अनुसार यह 'इत्यलम्' पूर्वा' की रचना है। देखिए 'प्रतिनिधि कविताएँ- पृष्ठ, 53

'विशाल जीवन' में जीवन की महिमा का प्रकारान्तर से बखान है। प्रणय-विरह में दूसरे का आसरा क्यों ? कविता की अंतिम पंक्ति है-

'जीवन ही यदि ऊँचा तो ऊँची समाधि हो रक्षक क्यों ?'[2]

'भग्न दूत' की कविता 'पराजय गान' में 'टूटे हृदय-गेह' और 'भग्नगेह की टूटी प्राचीरों' के बिम्ब हैं, इत्यलम्' की रचना 'वन पारावत' में 'नभ की पृष्ठभूमि पर चित्रित से मन्दिर के भग्नावशेष पर दो वन-पारावत बैठे हैं'। वे प्रकृति से एकरस हैं; प्रणय में उनकी उल्लास-चंचलता से कवि दो नसीहतें प्राप्त करता है-

1. 'और प्रणय का चरम प्रस्फुटन आत्म-व्यंजना ही तो है।'

2. खग-युगल ! करो सम्पन्न प्रणय, क्षण के जीवन में हो तन्मय।'[3]

इत्यलम्' में हारिल के पहले कवि-व्यक्तित्व की व्यंजना करने वाला 'कीर' आता है, जो 'प्रच्छन्न' गगन का वक्ष चीर कर अकेला उड़ा जा रहा है', वह पृथ्वी के आह्लाद का प्रतीक है, हृदय की अमिट साध है, 'मूक पीर' को बिखरा देने वाला है। 'भग्नदूत' और 'चिन्ता' में कवि अभिव्यक्ति के संकट से जूझता है, इत्यलम्' में आत्म-व्यंजना को वह चरम प्रस्फुटन मानता है। प्रणय का संदर्भ ('वन-पारावत') यदि हटा दिया जाय तो यह कवि का लक्ष्य बन जाती है। 'भग्नदूत' का कवि 'अखिल विश्व का प्रेम' खोजता है, 'अखिल विश्व की पीड़ा' संचित करता है। यही उसकी कविता की पृष्ठभूमि होगी, ऐसा मानना उचित है क्योंकि कवि 'असंख्य हृदयों का गाथाकार' और 'जीवन का कवि' होने की घोषणा करता है।[4]

बन्दी जीवन की स्मृतियाँ :

अज्ञेय ने बन्दी जीवन की स्मृतियों की सर्जनात्मकता का उपयोग किया है। सशस्त्र क्रांति से मोह-

---

2 सदानीरा-1, पृष्ठ, 138

3 वही, पृष्ठ, 138,39

4 वही, पृष्ठ, 136

भंग, उससे उत्पन्न निराशा एवं अवसाद के बावजूद कवि के अन्तर्मन में सृजन की लालसा हिलोरें लेती हैं। संग्रह की निम्नलिखित कविताएँ बन्दी जीवन के अनुभवों के ताने-बाने से बुनी गयी हैं-

1. 'बद्ध' 2. 'जीवनदान' 3. 'उषा के समय' 4. 'बन्दी गृह की खिड़की' 5. 'धूल भरा दिन' तथा 6. 'दूरवासी मीत मेरे'

'बद्ध' शीर्षक कविता कवि के आत्म-संघर्ष और आत्म-द्वन्द्व की कहानी है। लौह-श्रृँखलाओं ने कवि की शक्ति को बाँध रखा है। उसमें 'जगव्यापी अत्याचार' को समाप्त करने की शक्ति है लेकिन कवि की कठिनाई यह है-

'आज शक्तियाँ मेरी ही फिर विमुख हुईं क्यों मुझसे ?
मेरा साहस ही परिभव में है मेरा प्रतिद्वन्द्वी-
किस ललकार भरे स्वर में कहता है : बन्दी! बन्दी! '5

कवि के एकाकी, स्तब्ध प्राण यह दंश झेलने के लिए विवश हैं। लेकिन केवल शरीर बन्दी है, आत्मा मुक्त है। कवि का सबसे बड़ा आदर्श-जिसे वह जीवन का चरम मूल्य मानता है, स्वतंत्रता, अपहृत है; जिसके लिए वह अपना सर्वस्व निछावर कर सकता है। 'जीवनदान' इसी भाव-भूमि पर लिखी गयी है। 'बन्दी गृह की खिड़की' भी स्वतंत्रता को जीवन का चरम मूल्य घोषित करती है।

'उषा के समय' शीर्षक रचना दो दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है-पहली दृष्टि है मृत्यु के प्रति कवि का वीर-भाव-

'मरण ? पिघल कर सजल भक्ति से, मिल जाना उस महच्छक्ति से!
करें मृत्यु का क्यों न उल्लसित होकर हम आह्वान।[6]

दूसरी है व्यापक मौन की अनुभूति-

[6] वही, पृष्ठ, 143